डॉ. शोभा अग्रवाल 'चिलबिल'

भूख की बाढ़ का प्रबन्धन

(पटाक्षेप)

पात्र परिचय

बच्चे

अंकित

धीरेन

शिवम

आयु लगभग 9 वर्ष से 14 वर्ष के मध्य

स्त्री पात्र

सरला जी-अंकित की माता

आयु लगभग तीस वर्ष

पुरुष पात्र

मामाजी-अंकित के मामाजी

वीरेश जी-अंकित के पिताजी

वेशभूषा

पात्र अभिनय के अनुकूल वेशभूषा

(पर्दा खुलता है)

(दृश्य)

(स्टेज पर घर का दृश्य है। अंकित और उसकी माँ बैठे हैं। वह दोनों अखबार पढ़ रहे हैं।)

(नेपथ्य से घंटी की आवाज आती है। अंकित उठ कर बाहर की ओर जाता है और मामाजी के साथ प्रवेश)

अंकित : (खुशी से) माँ! मामाजी आ गए।

माँ : (खुशी से उठ कर स्वागत करते हुए) आओ भइया बैठो!

(मामा जी बैठ जाते हैं। अंकित की माँ भी उनके पास बैठ जाती हैं। अंकित मामा जी के लिए रसोई से पानी और लड्डू लाता है। वह भी उनके पास बैठ जाता है।)

(मामा जी उठ कर वाशबेसिन में हाथ धोते हैं।)

मामाजी : (लड्डू खाते हुए) दीदी! लड्डू घर में बनाए हैं क्या?

माँ : हाँ भइया! घर में ही बनाए हैं।

अंकित : (उचकता हुआ) मामा जी! आप आने वाले थे, इसलिए माँ ने लड्डू बनाए। हमें भी खाने को मिल गए।

मामाजी : तो लो खाओ न तुम भी। लेकिन दीदी! क्या कारण है कि अंकित तो बहुत पतला हो गया, तबियत तो ठीक है न?

माँ : तबियत तो ठीक है इसकी, बाढ़ ले रहा है, इसलिए लम्बा हो गया है व दुबला भी।

अंकित : (एक लड्डू उठाते हुए) मामा जी! माँ कहती हैं- तुम्हारा शरीर बढ़ रहा है। खूब खाओ तो और बाढ़ आ जाएगी।

मामाजी : (हँसते हुए) आज मैं तुम्हें बाढ़ के बारे में बताऊँगा।

अंकित : बाढ़ के बारे में?

मामाजी : हाँ।

माँ : अच्छा तुम लोग बातें करो। मैं खाना बना लूँ। भइया खाने में क्या खाओगे?

मामाजी : जो चाहे बना लो। जल्दी क्या है, बना लेना।

(अंकित के पापा वीरेश जी का प्रवेश)

मामाजी : (उठकर उनका अभिवादन करते हुए) नमस्ते जीजा जी!

पापा : नमस्ते भइया! कैसे हो? अच्छा हुआ आप इतवार के दिन आए, मैं भी मिल गया।

(पापा भी बैठ जाते हैं।)

मामाजी : हाँ जीजा जी! अंकित बढ़ रहा है, इसलिए आज बाढ़ प्रबन्धन के बारे में बात करेंगे।

पापा : (हँसते हुए) बहुत अच्छा भइया!

(अंकित के दो दोस्त धीरेन और शिवम का प्रवेश)

दोनों : (हाथ जोड़ कर) नमस्ते!

मामाजी और पापा : (एक साथ) खुश रहो बच्चों!

धीरेन : खेलने चलोगे!

अंकित : नहीं, यह मेरे मामाजी हैं। वह बाढ़ के बारे में बताएँगे। आओ तुम लोग भी बैठो।

(दोनों दोस्त धीरेन्द्र और शिवम बैठ गए। अंकित ने उन्हें लड्डू खाने के लिए दिया।)

मामाजी : बाढ़ क्या होती है?

बाढ़ का जल आस-पास की मानव बस्तियों में जाकर बहुत नुकसान पहुंचाता है।

अंकित : जब नदी का जल-स्तर बहुत बढ़ जाता है और जल-वाहिकाओं को तोड़ता हुआ आस-पास की जमीन पर खड़ा हो जाता है, तब बाढ़ की स्थिति पैदा हो जाती है। यह जल आसपास की मानव बस्तियों में जाकर भी बहुत नुकसान पहुँचाता है।

धीरेन : मामा जी! बाढ़ आने से बहुत से नुकसान और भी होते हैं।

मामाजी : क्या-क्या?

धीरेन : * बाढ़ आने से मानव बस्तियों के डूबने से काफी लोगों की मौत हो जाती है। कुछ लोग बीमार पड़ जाते हैं।

* कृषि योग्य भूमि डूबने तथा मानव-बस्तियों के डूबने से जनहानि के साथ ही बहुत अधिक अव्यवस्था फैल जाती है। विस्थापित लोगों के पुनर्स्थापन की समस्या आती है। साथ ही भारी संख्या में पशु मर जाते हैं व बहुत अधिक आर्थिक हानि होती है।

* बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में कई दूषित जल जनित बीमारियाँ फैल जाती हैं। जैसे-हैजा, आन्त्रशोध, हेपेटाइटिस, टायफाइड, पीलिया आदि।

* बाढ़ से प्रशासनिक आधारभूत ढाँचा ही अव्यवस्थित हो जाता है। जैसे-बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में पुल, सड़क, रेल की पटरियाँ, कारखाने, सरकारी व गैर सरकारी कार्यालयों, विद्यालयों व व्यावसायिक प्रतिष्ठानों आदि को भी नुकसान पहुँचता है।

मामाजी : (ताली बजाते हैं) बहुत अच्छा, तुम लोग मन लगा कर पढ़ते हो।

शिवम : लेकिन बाढ़ आने के कुछ लाभ भी हैं।

धीरेन : बाढ़ आने के लाभ?

शिवम : बाढ़ आने के लाभ हैं, जैसे-बाढ़ खेतों में उपजाऊ मिट्टी लाकर जमा करती है, जो फसलों की उपज को बढ़ा देती है। जैसे-ब्रह्मपुत्र नदी में स्थित मजौली द्वीप जो असम में है। वह हर वर्ष बाढ़ग्रस्त होता है। वहाँ चावल की फसल बहुत अच्छी होती है।

मामाजी : ठीक कह रहे हो शिवम! लेकिन यह लाभ व्यापक जन-धन व अर्थ-हानि के सामने गौण हैं। बाढ़ काफी तबाही लाती है। विशेष रूप से दक्षिण पूर्व और पूर्व एशिया के देशों विशेषकर चीन, भारत और बांग्लादेश में इसकी बारम्बारता और होने वाले नुकसान अधिक हैं।

पापा : भारत में भी बिहार, पश्चिम बंगाल तथा असम सबसे अधिक बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में से हैं। वापस लौटते हुए मानसून के कारण तमिलनाडु में बाढ़ नवम्बर से जनवरी माह के बीच आती है। उत्तर भारत की नदियाँ विशेषकर पंजाब और उत्तर प्रदेश में बाढ़ लाती रहती हैं। मानसून वर्षा की तीव्रता तथा मानव क्रियाकलापों द्वारा प्राकृतिक संरचना के अवरुद्ध होने के कारण राजस्थान, गुजरात, हरियाणा और पंजाब में कुछ इलाके पिछले कुछ दशकों से आकस्मिक बाढ़ से जलमग्न होते रहे हैं।

माँ : यह तो ठीक है, लेकिन बाढ़-नियन्त्रण हेतु सरकार ने भी कई कदम उठाये हैं। जैसे-

* बाढ़-विभीषिका से होने वाली जन-धन तथा कृषि की हानि को रोकने हेतु स्थायी एवम् अस्थायी उपायों की खोज करना।

* नदी तटबन्ध बनाना।

* नदी धाराओं का निर्माण करना ताकि नगरीय बस्तियों की सुरक्षा की जा सके।

ब्रह्मपुत्र नदी में स्थित मजौली द्वीप।

भारत में बिहार सबसे अधिक बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में से एक है।

* बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों के गाँवों को ऊँचाई पर बसाकर बाढ़ के प्रकोप से सुरक्षित करना।

* फसलों को सुरक्षित करना आदि।

बच्चो! तुम लोग बता सकते हो कि इन सब कार्यों को कौन-सा विभाग संचालित करता है?

शिवम : भारत सरकार ने 1954 में बाढ़ नियन्त्रण बोर्ड की स्थापना की। बाढ़ नियन्त्रण बोर्ड ने गंगा बाढ़ नियन्त्रण बोर्ड तथा गंगा कमीशन गठित किए। सन् 1976 में भारत-सरकार ने राष्ट्रीय बाढ़ आयोग की स्थापना की।

मामाजी : (पेट पर हाथ फेरते हुए) अरे दीदी! बाढ़ की चर्चा करते-करते तो पेट में भूख की बाढ़ आ गई। मैं नहा लूँ, तब तक तुम भूख की बाढ़-प्रबन्धन का इन्तजाम करो।

(सब हँसते हैं।)

(नेपथ्य से आवाज आती है।)

(मामा जी बाथरूम जाते हैं, बच्चे खेलने व सरला जी भूख की बाढ़ का प्रबन्धन करने रसोई में।)

(पटाक्षेप)

सपंर्क करें।

शोभा अग्रवाल चिलबिल

आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर

नई दिल्ली-110 060

मो. न. 08882161295